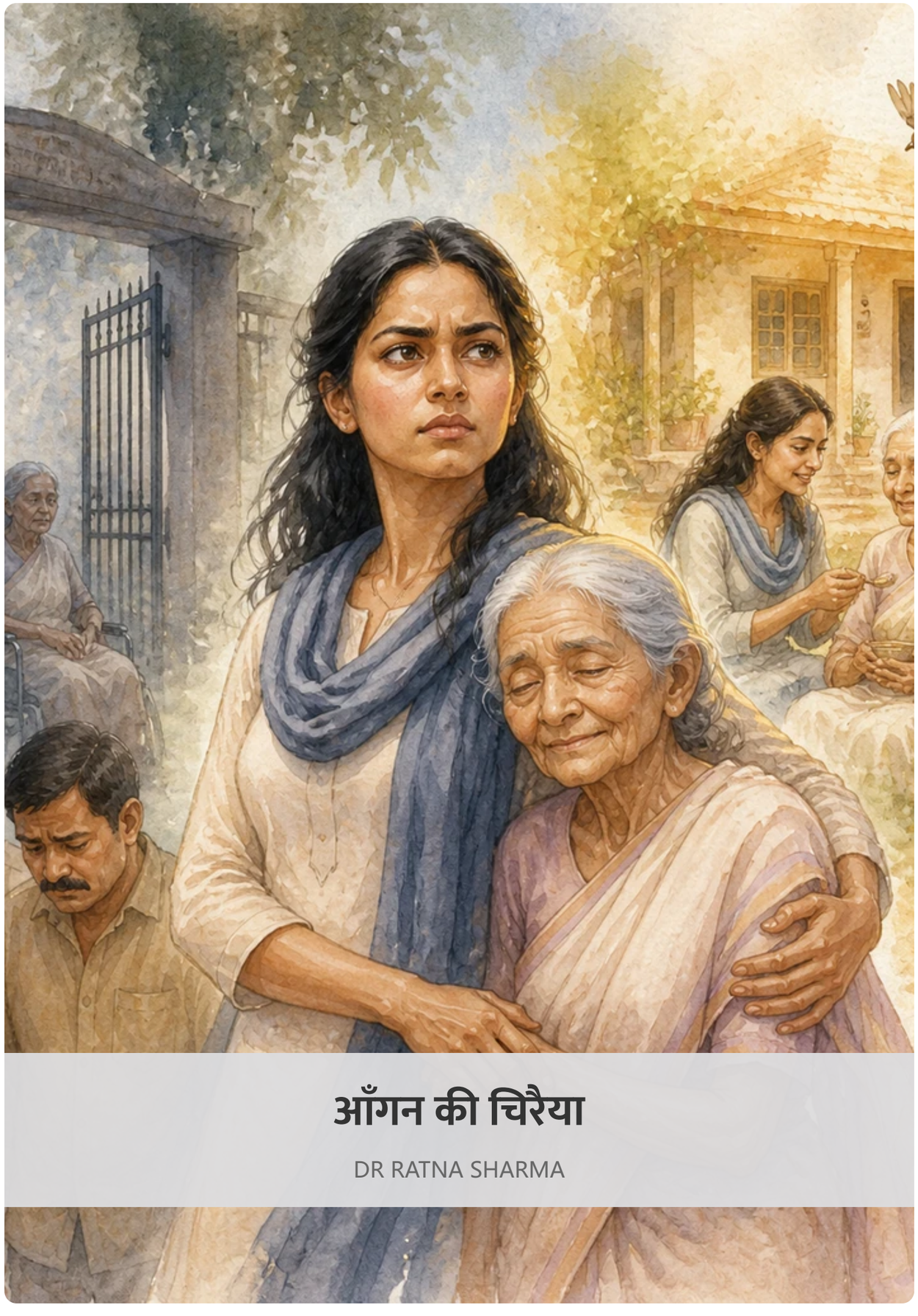

आँगन की चिरैया

DR RATNA SHARMA

बरसों बाद अनन्या अपने पुश्तैनी घर की दहलीज पर खड़ी थी, जहाँ बचपन की यादें धूल फाँक रही थीं। घर का वह आँगन, जो कभी की हँसी से गूँजता था, आज एक अजीब सी खामोशी और उदासी में डू हुआ था। उसने देखा कि मुख्य द्वार पर लगा ताला जंग खा चुका था अ दीवारें अपनी चमक खो चुकी थीं।

पड़ोसियों से पता चला कि अनन्या के भाइयों ने माँ को शहर के
एक वृद्धाश्रम में छोड़ दिया है ताकि वे संपत्ति का बँवारा कर सकें। य
सुनकर अनन्या का दिल दहल गया और उसकी आँखों में गुस्से और दु
के आँसू भर आए। उसने उसी पल ठान लिया कि वह अपनी माँ को उन
खोया हुआ सम्मान और घर वापस दिलाकर रहेगी।

वृद्धाश्रम के एक कोने में बैठी शारदा देवी की धुंधली आँखें दरवा
की ओर टकटकी लगाए किसी अपने का इंतज़ार कर रही थीं। जैसे ह
अनन्या ने उन्हें पुकारा, माँ के कांपते हाथ अपनी बेटी को गले लगाने क
लिए बढ़ गए। उस मिलन में सालों का दर्द और ममता की तड़प एक स
बह निकली।

अनन्या ने अपनी माँ का हाथ थामकर उन्हें भरोसा दिलाया कि अ
वह कभी अकेली नहीं रहेंगी। उसने देखा कि उसकी माँ के पास केवल
एक छोटी सी पोटली थी, जिसमें उनकी पूरी दुनिया सिमट गई थी। व
अपनी माँ को उस बेरंग जगह से निकालकर वापस उनके अपने आँगन
ले जाने के लिए दृढ़ संकल्पित थी।

अनन्या अपने भाइयों के पास पहुँची और उनके सामने कानूनी कागजात रखते हुए अपनी माँ के हक की मांग की। उसने साफ़ कह कि कि घर की असली मालकिन माँ हैं और उन्हें बेदखल करना न केवल प है बल्कि कानूनी अपराध भी है। भाइयों के चेहरे पर शर्मिंदगी और हार भाव साफ दिखाई दे रहे थे।

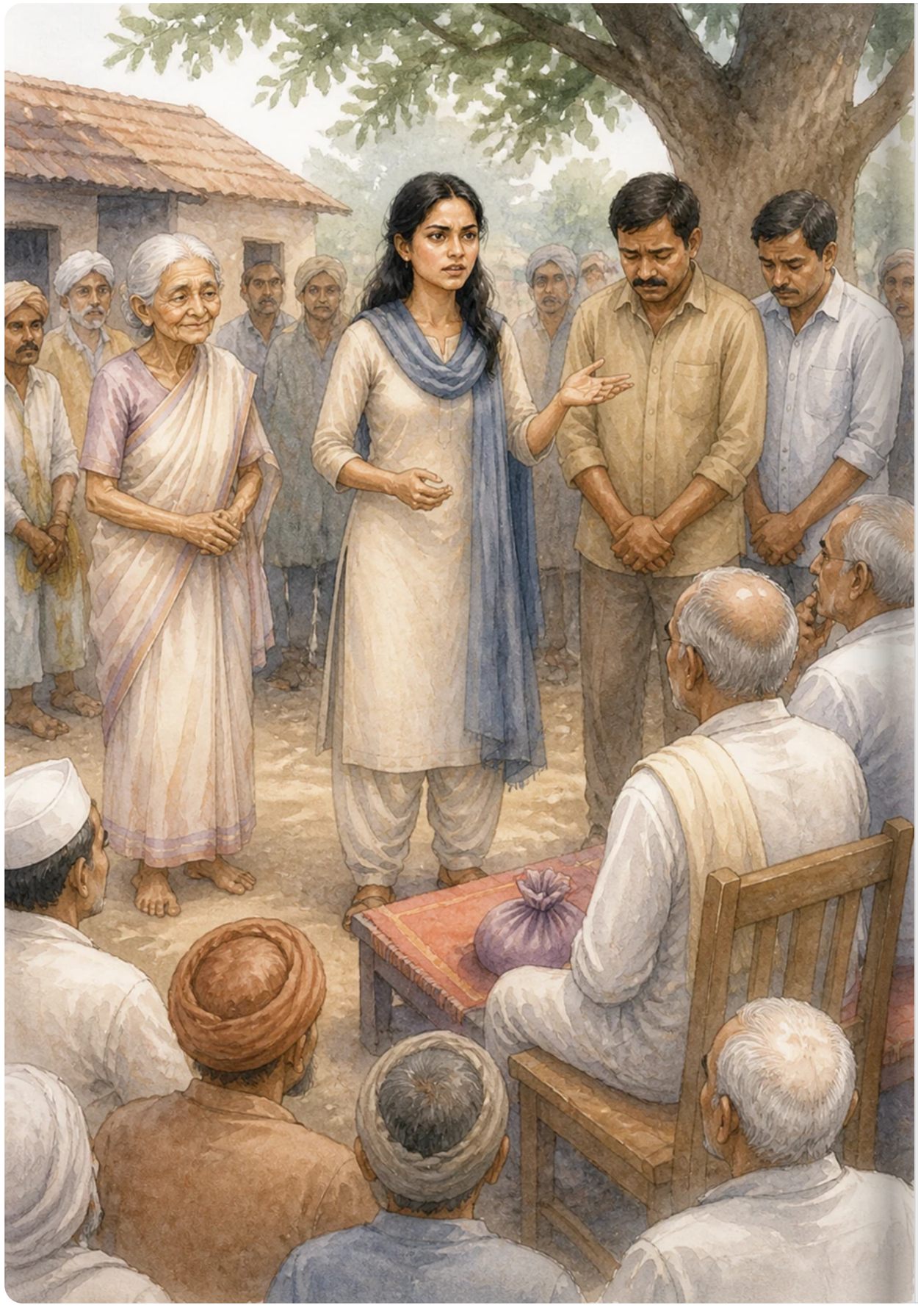

गाँव की पंचायत के सामने अनन्या ने तर्क दिया कि जिस माँ ने अपना पूरा जीवन बच्चों को पालने में लगा दिया, उसे बुढ़ापे में बेघर करना मानवता के खिलाफ है। उसकी बातों ने गाँव के बड़ों के दिलों को झकझोर दिया और सबने अनन्या के साहस की सराहना की। अंततः सच की जीत हुई और माँ को उनके घर का मालिकाना हक वापस मिल गया।

अनन्या अपनी माँ को लेकर वापस उसी पुश्तैनी घर लौटी, जहाँ उन्हें जबरन निकाल दिया गया था। उसने घर के ताले खोले और खिड़कियों से धूल हटाई ताकि ताजी हवा और रोशनी फिर से अंदर आ सके। माँ के कदमों के निशान एक बार फिर उस घर की मिट्टी पर अप छाप छोड़ रहे थे।

अनन्या ने आँगन के उस पुराने पेड़ के नीचे माँ के लिए एक आरामदायक कुर्सी लगाई, जहाँ वे कभी कहानियाँ सुनाया करती थीं। उसने घर के हर कोने को फूलों और रोशनी से सजाया ताकि माँ को फि से वही अपनापन महसूस हो सके। घर की दीवारें अब फिर से खुशियों गूँज सुनने के लिए तैयार थीं।

सुबह की पहली किरण के साथ ही आँगन में गौरैया चहचहाने लगीं, जैसे वे भी घर की मालकिन की वापसी का जश्न मना रही हों। शारदा देवी के चेहरे पर अब शांति और संतोष था, क्योंकि उनकी बेटी उन्हें केवल एक घर नहीं बल्कि उनका स्वाभिमान वापस दिया था। अनन्या ने साबित कर दिया कि बेटियाँ भी वंश का मान और माँ का सहारा होती हैं।

शाम की सुनहरी धूप में माँ और बेटी एक-दूसरे का हाथ थामे आँगन में बैठे थे, और उनकी हँसी हवाओं में घुल रही थी। यह केवल ए घर की वापसी नहीं थी, बल्कि रिश्तों की जीत और एक नए सवेरे कि शुरुआत थी। आँगन की चिरैया अब आज़ाद थी और अपने घर के सुरक्षि साये में चहक रही थी।